Name of scholar : Samiksha Dubey **Notification no :** 594/2026
Name of Supervisor : Prof. Neeraj Kumar **Date of Award :** 17-02-2026
Name of Department : Hindi

शोध विषय : 21VIN SADI KI STREE-KAVITA KI BHASHA KA ADHYAYAN (2001-2020 TAK KI HINDI KAVITA)

Keywords : 21वीं सदी, हिंदी-कविता, स्त्री-कविता, स्त्री-भाषा, बिंब, प्रतीक, मिथक

Findings

शोध में स्त्री-कविता की भाषा का अध्ययन और विश्लेषण करने के बाद हिंदी की स्त्री-कविता में व्याप्त एक नई दृष्टि का बोध होता है। 21वीं सदी में कविता और स्त्री दोनों में बदलाव आए हैं। 21वीं सदी के साहित्य की सभी विधाओं में विशेषकर स्त्री-विमर्श के संदर्भ में एक नई पीढ़ी तैयार हुई है जिसे गद्य और पद्य दोनों में देखा जा सकता है। गद्य का संबंधसीधा विचार और विमर्श से होता है इसलिए गद्य के क्षेत्र में स्त्री-लेखन जैसे जीवनी, उपन्यास, कथा साहित्य पर वर्तमान समय में पर्याप्त शोध होता दिखाई पड़ रहा है। यह शोध प्रबंध कविता के क्षेत्र में सक्रिय नई पीढ़ी के विश्लेषण के दृष्टिकोण से नवीन और महत्वपूर्ण है। इस शोध प्रबंध के द्वारा हिंदी आलोचना में स्त्री-कविता के सौंदर्यशास्त्र के संबंधमें कुछ नया ढूंढने का प्रयास किया गया है। यह शोध प्रबंध स्त्री-कविता को साहित्यिक विमर्श का अनिवार्य अंग मानता है। हमने स्त्रीवादी विचारधारा को लैंगिक धरातल पर समझने का प्रयास कविताओं के माध्यम से किया है। वर्तमान समाज कोई आदर्श या उन्नत स्तर पर पहुँच चुका समाज नहीं है। भारत आज भी तीसरी दुनिया का देश है और धर्म और पितृसत्ता से यहाँ की स्त्रियों का जीवन संचालित होता है। समाज में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं जिससे स्त्रियों के प्रतिनिधित्व में बढ़ौतरी हुई है। लेकिन सामाजिक धरातल पर आज भी स्त्रियों के जीवन पर उनका अधिकार बहुत कम है।

पितृसत्तात्मक समाज में स्थित हिंदी की स्त्री-कवि अपनी अनुभूतियोंऔर सृजनात्मकता को कैसे अभिव्यक्त करती हैं इसका पता हमें उनकी कविता के मर्म और शिल्प में प्रयुक्त हो रहे काव्यतत्व या सौंदर्यशास्त्रीय तत्वों जैसे मिथकों, प्रतीकों और बिंबों से चलता है। हिंदी स्त्री-कविता अपने अंदर

सामाजिक विद्रोह लेकर चलती है और इसी बात की जाँच परख हम करना चाहते थे। स्त्री-कविता की भाषा को स्त्रियों ने अपने आत्मसंघर्ष से ही साहित्य के अंदर विशिष्ट बनाया है। कविता में वे शब्दों का प्रयोग इतनी सजगता से करती हैं जिसमें व्यवस्था से वैचारिक टकराहट कभी साफ़ जबान में समझ आता है तो कभी बहुत हल्के इशारों में। पितृसत्तात्मक व्यवस्था से संवाद करना स्त्री-लेखन और स्त्री-भाषा का अनिवार्य पहलू है। स्त्री-कविता की काव्य संवेदना स्वतंत्रता और समानता की तीव्र इच्छा के इर्दगिर्द घूमती है। 'पितृसत्ता' कोई सिद्धान्त भर नहीं है। इसके व्यावहारिक रूप से स्त्री-जीवन जिन जटिलताओं से जूझता है वे उनके व्यक्तित्व के लिए पीड़ादायक हैं। इसलिए स्त्री लेखन के द्वारा, संस्कृति में व्याप्त सर्व-स्वीकृत मूल्यों को तोड़ना और अपनी देह और मन की मुक्ति के लिए लिखना कविता के जगत में नए अनुभवों को स्थान देता है। कोई स्त्री जब लिखती है तो उसके भीतर मौजूद लैंगिक पहचान के साथ ही हर अनुभूति को ग्रहण करती है जिसका प्रतिबिंब उसके लेखन में जगह-जगह उजागर होता है। वह वर्चस्ववादी पितृसत्ता द्वारा रौंदी गई अपनी अस्मिता की खोज करती है। इसके लिए वह इतिहास में भी जाती है और मिथक के संसार में भी।

दमित लैंगिक पहचान को प्रतिष्ठित करने के लिए स्त्री-कवियों ने अपनी मौलिक अनुभूतियों को चित्रित किया है, जिसमें प्रेम, यौनिकता, विडंबनाबोध, हीनताबोध, एकान्त, एकालाप, करुणा जैसे विभिन्न एहसास हैं। जिनसे केवल एक स्त्री ही गुजरती है। स्त्री अपने असली रूप को खोज रही है, उसकी कविताओं में भी यही खोज का सिलसिला दिखाई पड़ता है। हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि स्त्री-कवि कभी अपने जेंडर की खोल में कैद होकर तो कभी उससे मुक्त होकर दोनों तरह की दुनियाओं के बीच में एक विचित्र तरह से फँसी हुई हैं। कहीं मातृत्व टपक रहा है, जैसा वह वास्तविक समाज में उपस्थित है उससे भी गहन, तो कहीं एक प्रेमी, एक पुरुष, एक साथी के लिए मन में दुःख है क्योंकि प्रेम ने स्त्री को निराश कर दिया है। वह त्याग से दुःखी नहीं है, अपनी गढ़ी हुई छवि के बोझ से है। स्त्री-कविता में समाज से सीधा विद्रोह है। कविता में हम स्त्री को पितृसत्ता द्वारा हर पल छले जाने पर आक्रोश की और गहन निराशा की मुद्रा में भी देखते हैं जिससे निपटने के लिए वह प्रतिसंसार रचने में प्रयासरत है। सामाजिक प्रतिबंधों में कैद स्त्री देह की छटपटाहट जिसमें छोटी-छोटी चीज़ों और घटनाओं से प्रभावित होते जीवन के कई चित्र हैं। इतिहास में स्त्री विचारकों ने स्त्री की स्वतंत्रता, अधिकार और निजता के लिए जो संघर्ष किया उसी के आधार पर स्त्री लेखन की नींव का निर्माण हुआ है।

भाषा में लैंगिक भेदभाव, स्त्री द्वेष, लिंगकेंद्रिकता, जेंडर रोल्स, स्त्री की अभिव्यक्ति को नियंत्रित करते हैं जिसका अतिक्रमण स्त्री-कविता एक समानांतर स्त्री-भाषा के निर्माण से करती है। स्त्री-कविताओं

के बिम्ब लैंगिक भेदभाव, उत्पीड़न, दैनंदिन जीवन के संघर्ष, स्त्री अनुभूतियों की विशिष्टता को उजागर करते हैं जिनमें वे अपनी ही अनुभूतियों की दुबारा पहचान करती नज़र आती हैं। स्त्री कविताओं में प्रचलित मिथकों को तोड़ा गया है और उनकी पुनर्रचना की गई है। स्त्री की आत्मिक अभिव्यक्ति का यह एक विशिष्ट लक्षण है।स्त्री कविताओं के प्रतीक परंपरा और संस्कृति हर तरह के पूर्वाग्रहों और हिंसा से मुक्त है।

स्त्री-कविता पर यह विश्लेषण समाज और साहित्य में स्त्री के विपक्ष में मौजूद पुरानी धारणाओं को ध्वस्त करता है। स्त्री के प्रति विद्यमान पूर्वाग्रह जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था की विरुद्ध बनी स्त्री-भाषा का रूप प्रस्तुत करता है।